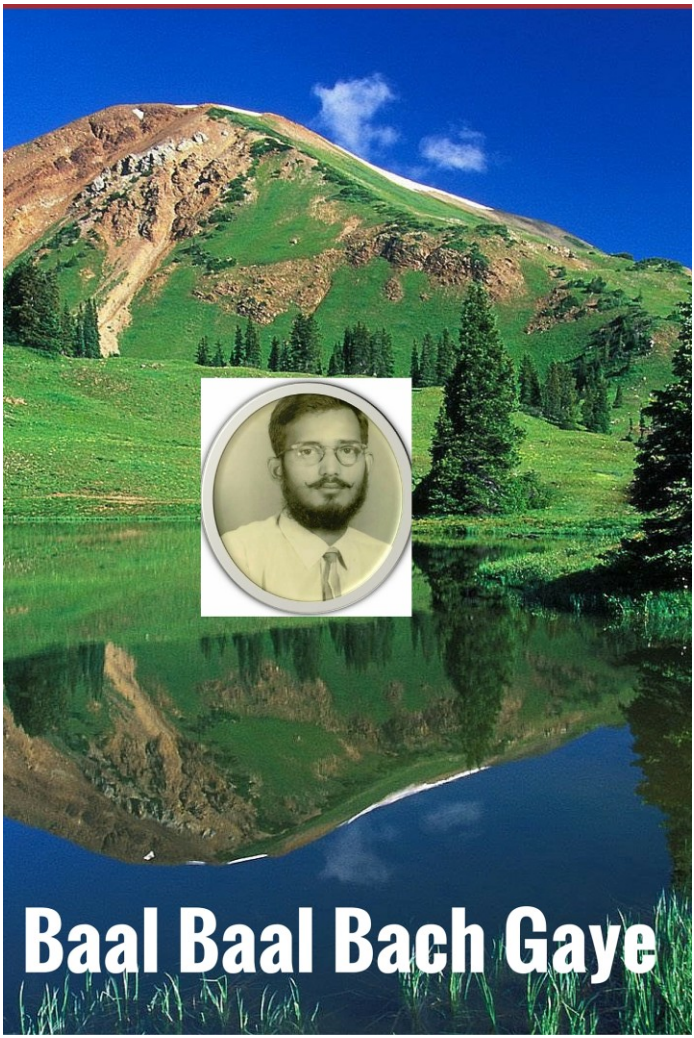

Saved By The Bell

Saved By The Bell

By

Dr Ram L Prasad

2016

बाल बाल बच गए

प्रभू की कृपा से जीवन दान मिली

राम लखन प्रसाद
के कलम से

२०१६

मेरे प्रारंभिक दो शब्द

इस दुर्घटना ग्रन्थ को हमने बहुत सोच समझ कर रचा है | बचपन से जवानी तक हम कई बार बाल बाल बच गए थे | उन सभी वृतांतों को तो हम इस श्रंखला में नहीं प्रस्तुत कर सकते हैं लेकिन उन में से कुछ हादसायें ऐसी थी जिन के जरिये मेरे और मेरे परिवार की तीसरी याने आंतरिक आँखें खुल गयी थी और हम परम पिता परमेश्वर में अटल श्रद्धा और भक्ति भाव ले कर अपने जीवन को सार्थ बनाने में समर्थ हुए थे |

धन्य थे हमारे पूर्वज जिनके दया धरम से हमारा कल्याण हुवा | मेरे आजा, मेरी आजी, मेरे पिता श्री और मेरी माता जी का सदा मेरे साथ उनका आशीर्वाद रहा है | उनका पावन हाँथ अगर हमारे सर पे सदेव नहीं रहता तो में भी कोई पतित दानव ही रह जाता | आज भी मेरे ऊपर उन सब की असीम कृपा बनी है और मेरा जीवन शुभ शांति से व्यतीत हो रहा है |

इन दुर्घटनाओं से पहले मैं भी बाल्मीकि की तरह एक व्याध ही था पर जब से चेता तभी से अपने प्रभु ले चरणों में अपना सब कुछ निउछावर करता हुवा जीवन व्यतीत करने लगा था | जान राम लखन नाम प्रतापा भय सिद्ध जब करे श्री राम की जापा |

हमारे सभी प्रकरणों से पाठक को यह ज्ञांत जरूर हो जायेगा कि हम एक साधारण व्यक्ति ठहरे और चोट खा कर संभाले हैं | हमारे सब प्रसंगों को पढ़ कर आप को इन की गहराईयों का पता चल जाएगा |

अब मेरे जीवन का बस एक ही लक्ष्य रह गया है | मेरा निश्चय बस एक यही कि मैं अपने प्रभु के चरणो में पड़ा रहूँ | अपने परम पिता परमेश्वर को पा जाऊं और उन पर अपना सब कुछ निउच्छार कर दूँ | मैं अब पूरे तौर से जान गया हूँ कि मुझ में और उन में बस भेष यही है कि मैं एक पूजक हूँ और वो मेरे नारायण हैं | मैं इस संसार का कैदी हूँ और मेरे भगवन मेरे जीवन के उद्धारकर्ता और पालनहार हैं |

जय श्री कृष्णा |

पहला प्रसंग

बाल बाल बच गए

आज से कई वर्ष पहले मैं फिजी के साप्ताहिक पत्रिका जाग्रति में समय समय पर अपने योग्यता अनुसार कुछ कहानियां और कवितायेँ लिखा करता था | आज फिर से वही मनोदशा या भाव जाग उठा है और अब दिल करता है कि अपनी कुछ बीती विषयों को याद करूँ और एक धारावाहिक मोड़ देने कि कोशिश करूँ | हमारे सिलसिले बहुत पुराने हैं इस लिए शायद आज के पीढ़ी को हमारे कुछ दास्तान बाबा आदम के ज़माने के विषय लगें पर यह हमारी कोशिश रहेगी कि उनको अपने शब्दार्थ से दिलचस्प बनाये |

बात सन उन्नीस सौ उनचास (१९४९) की है जब मैं नांदी शहर के सामबेतो गावं के एक छोटे से बहुतीनी बस्ती केअपने पूज्य माता पिता और आजा आजी के पवित्र जमींदारी पर अपना बचपन बिता रहा था | उम्र दस साल की थी और पाठशाला के बाद जब घर आता था तो अपने पूर्वजों के साथ किसानी के तौर तरीके सीख रहा था | हमारे खेतों में जहाँ ईख, अनरस, धान, मकई और अरहर वगैरह लहराते थे वहीँ मेरे आजा आजी जो शाकाहारी थे विभिन्न तरकारियों और फलों की खेती बड़े शौक से करते थे | मैं अपने पिता जी के साथ पपीते के खेत में अक्सर जाया करता था |

उस दिन शाम को झिमिर झिमिर वर्ष| हो रही थी और मैं अपने पिता जी के साथ उनके पपीते के खेत में उनकी मदद कर रहा था | कुछ हवा बयार भी चल रही थी और बिजली चमकने और उस के घड़घड़ाहट की आवाज हमारे कानो को जैसे बहरे कर रही थी | अचानक एक बिजली हमारे ही पास आ गिरी और पपीते के पेड़ों के कतार को चीरती हुयी धरती माता में समां गयी | मैं तो कुछ डर से

और कुछ उस बिजली के गंभीर गर्जन के मारे जमीन पर गिर पड़ा था | मुझ को जैसे एक बेहोशी सी छा गयी थी पर थोड़ी देर में जब हम ने अपना होश सम्हाला तब मैं ने अपने पूज्य पिता जी को एक कोने में बेहोश पाया और उन के मुंह से फेचकुर निकल रहे थे | ऐसे लगा की पिता श्री की देहांत हो गया है लेकिन उन दिनों हम को पाठशाला में फर्स्ट ऐड के कुछ हुनर सिखाये जाते थे जिन से हमने अपने पिता जी को होश में लाने की कोशिश किया |

उनके जीभ गले के अंदर अटक गयी थी और दांत बैठ गए थे | बस हम ने उनके मुंह में अपने अंगूठे को डाला और दांतों को खोल कर जीभ को गले के अंदर से खींचा | बगल में बैलों के खुर से बने गड्ढे में जो पानी रुका था उस को अपने चुल्लू में ले कर पिता श्री के मुंह में छोड़ा और उनके सीने को दबाने लगा | पिता जी ने एक खखार लिया और उनकी साँसे चलने लगी | लेकिन वे अभी भी पुरे तौर से होश में नहीं आये थे | एक बारह वर्ष का लड़का कैसे अपने बेहोश पिता को अपने पीठी पर ले कर लगभग दस चैन घर पहुंचा इस का अंदाज़| आज तक हम को नहीं है | लेकिन मैं जैसे घर पहुंचा और उस दर्दनाक घटना को घर वालों को सुनाया तो वे सब मेरे पिता की सेवा सुशुश्रुता और सही देखभाल में तुरंत लग गए | मेरे पिता जी बाल बाल बच गए |

मेरे घरवालों ने हम को हमारे कार्य की सराहना किये और मेरी माता जी ने तो मेरी आभारी इस लिए हुयी कि हमने एक सुपुत्र का फ़र्ज़ अदा किया और उनके सुहाग की रक्षा कर के पिता जी की जान बचाई | पर हम ने तो वही किया जो उस समय हम को सही लगा | आज तक हम यही सोचते हैं की परमात्मा के कृपा से हम पिता पुत्र बाल बाल बच गए | मेरी आजी ऊपर आकाश की तरफ देख कर कहती रही "बिजली माता शरणागति" |

दूसरा प्रसंग
बाल बाल बच गए

परम पिता परमेश्वर के असीम कृपा और आशीर्वाद से तथा अपने पूर्वजों के पुण्य कमाई से हमारा जीवन जहाँ वृतान्तों और प्रसंगों से परिपूर्ण रहा वहीँ मेरे जिंदगी में दुर्घटनाओं की कमी नहीं रही | यही एक कारन हैं की मेरा अटल विश्वास मेरे ईश्वर में बढ़ता गया और खुद मुझ में भी एक प्रकार का आत्म सम्मान आता गया | धन्य हैं हमारे दयालु प्रभु और धन्य हैं हमारे पालन पोषण करता |

यह ज़िक्र उस समय की है जब हमारे परिवार की जागीर और जमींदारी हमारे कसबे में जाहिर ही नहीं पर एक ख़ास जलवा रखती थी | उन दिनों हमारे इष्ट मिंत्र तथा कई संथाएं हमारे परिवार से डाक द्वारा संपर्क किया करते थे | हमारे उपग्राम से हमारा डाकखाना लगभग पांच मील की दूरी पर साम्बेतो कोरो के समीप था | जब मैं अपने परिवार का सब से जेष्ट पुत्र और पोता था तो डाकखाने से सभी चिट्ठी पत्री लाना हमारा ही जिम्मेदारी बन गयी थी | मुझे उस उबड़ खाबड़ कच्ची सड़क पर नंगे पावों हर शनिवार को सुबह नौ बजे जाना पड़ता था | हमारी दारुण पद यात्रा को देख कर मेरे आजा जी ने हमारे लिए एक साईकिल खरीद दी थी | इस हरक्यूलिस साईकिल को हम दिलो जान से चाहते थे और अपने सोने वाले कमरे में इस को सुरक्षित रखते थे |

हमारे चेतराम काका जी ने हमको साईकिल चलना सिखाया था पर यह भी न जाने कितने बार गिरने के बाद, डांट डपट मिलने के बाद और कुछ चोट चपेट सहने के बाद हो सका था | गनीमत तो यही थी ही मैं अपना साईकिल चल|ना खूबखू सीख गया था |

दो पहिये की साईकिल दौड़ दिखती खेल
देना पड़ता था नहीं इस में कोई पानी तेल
पारी पारी से हिला अपने दोनों पैर
सवार हो के इस पे करते गावं का सैर

अब तो हमारा डाकखाने का सफर एक आकांछित मनोभूति हो गयी थी जिससे हर शनिवार की हमको बड़े उत्सुकता पूर्वक उस मनोरम यात्रा तय करने की इंतज़ार रहती थी | इस परिस्थिति की भी कई कारण थी जिनको हम धीरे धीरे वर्णन करेंगे |

इसी तरह हमारा डाकखाना जाने का सिलसिला कई महीनो तक सुचारू रूप से बिना कोई अड़चन या कष्ट के चलता रहा | हम हर शनिवार के सुबह बड़े शौक से तैयार हो कर अपने साईकिल पर उन कंकड़ी दार कच्ची सड़क पर आहिस्ते आहिस्ते जाते रहे | जनाब शौकत के दूकान वाले चौराहे पर बायीं ओर मूड कर सम्बेतो पाठशाला को पार करते हुए राजित के दूकान तक पहुँचते थे जहाँ एक पेनी में एक आइस ब्लॉक ख़रीद कर अपने गले की प्यास बुझा कर आगे बढ़ जाते थे |

थोड़ी देर में पंडित राम नारायण के घर के सामने हमारी एकअति होशियार और नयनम्रिगनी सहपाठी क्रिमिला देवी से ठीक दस बजे मुलाकात होती थी जहाँ हम को दो चार प्रेम के इधर उधर की बाते करने को मिलता था और सुस्ताने का भी बह|न| मिल जाता था | थोड़ी देर के गुफ्तगू के बाद तन मन प्रफुल्लित हो जाया करता था और हम आगे बढ़ जाते थे| जब पंडित बेचू प्रसाद का दूकान आ जाता तब अपने साईकिल को उनके बरामदे में खड़ा कर के उस दूकान के कोने के डाकखाने में बैठे बड़े मूछों वाले पंडित जी से कुछ ज्ञान ध्यान की बाते कर के अपने परिवार के और पास पड़ोस के लोगों के चिट्ठी पत्री ले कर वापसी यात्रा पर निकल जाते थे |

इसी तरह की एक शनिवार हमारे लिए हमारे वापसी यात्रा के लिए बड़ी मनहूस निकली थी | मैं हँसता, मौज उडाता अपने साईकिल पर अपने घर की ओर आ रहा था | आज किसी कारणवश मुझे क्रिमला देवी से न तो मुलाकात हो पाई थी और न ही हम कोई गुफ्तगू कर सके थे | बस यही फ़िक्र मेरे दिल में धूम मचा रही थी पर यात्रा तो जारी था | मेरी साईकिल धारावाहिक रूप से मुझको लिए चली जा रही थी |

आज भी थोड़ी झिमिर झिमिर पानी के बूंदे बरस रही थी पर सर पे तो मेरी लाल टोपी थी और तन पे बरसाती था | अपने पाठशाला को पार कर के जब हम श्री गजराज सिंह के घर के पास पहुंचे तब उनका कुत्ता मेरे साईकिल के चलती टायर को भोंकता हुवा पकड़ने की कोशिश में मेरे साईकिल के नीचे आगया | वो कुत्ता टोमी तो काओं काओं करता हुवा भाग निकला पर मेरी और मेरे साईकिल की तो दुर्दशा हो गयी थी | मैं साईकिल पर से गिरा और मेरे हाँथ पाओं सर और नाक में कई चोट लगे थे |

किसी तरह मैं सरक कर रास्ते के किनारे हो गया लेकिन अपने साईकिल को नहीं बचा सका | निरहू की मालवाली लोरी रफ़्तार से आई और मेरे साईकिल की नेस्त|नाबूत कर के चली गयी | लोरी चालक को पता भी न चला की वह मेरे साईकिल की सत्यानाश कर गया था | लेकिन मैं तो बाल बाल बच गया था |

वहां की कोलाहल को देख सुन कर मेरे पास के एक सहपाठी विजेन दौड़ा आया और मुझे सहारा दे कर अपने घर ले गया जहाँ उनकी बहन बिमला ने बड़े हुनर और सहूलियत से मेरा मरहम पट्टी किया | उनकी माता जी ने हमको शरबत पिलाया | इतने में श्री गजराज सिंह आगये जिनको मेरा पीड़ित और बुरा दशा देख कर दया आया और वे अपने मोटर द्वारा हमको मेरे घर पहुचाये | हम को तो अपने साईकिल को दफ़नाने का अवसर ही न मिला |

जब मेरे घर वालों को इस दर्दनाक घटने की पूरी खबर हुयी तो उन्हों ने भी वही कहा जो मेरे आजाजी का कहना था | “उस साईकिल की ऐसी की तैसी मेरा पोता बाल बाल बच गया हम लाखो पाये |”

मेरे सुख शांति के लिए मेरी प्रिये आजीजी ‘ओम नमो भगवते वासुदेवाय’ की प्राथना रट रट कर कई दिनों तक सुबह शाम करती रही |

तीसरा प्रसंग
जान बची लाखो पाये

हमारे साईकिल के दुर्घटना के बाद मेरे पिता जी ने मेरा घुड़सवारी में दिलचस्पी को देख कर मुझको एक घोडा ख़रीद दिया था जिस से हम उनके जमींदारी और अन्य किसानी कारोबारों का निरक्षण कर सकूँ | सप्ताह भर स्कूल से आने के बाद हम अपने घोड़े गोल्डी पर सवार हो कर अपने बस्ती का चक्कर लगाया करता था | इस से दोस्तों से मुलाकात हो जाती थी और यह घुड़सवारी मेरे तंदुरुस्ती के लिए भी उपयुक्त थी क्यूंकि हम गावं के खुले हवा की मजे उठाया करते थे |

पर हर शनिवार को डाकखाने के सफर के बाद मैं पिता जी के बकरियों का पालन की देखभाल करने जाया करता था | यह बकरियों का संग्रह हमारे घर से आठ मील दूर सीपिया नमक स्थान में था जहाँ पिताजी ने लगभग दो सौ बकरियों को पाल रखा था | हफ्ते भर उन बकरियों को हमारे गावं के मामा गोविन्द चराया करते थे और उनका देखभाल करते थे | हफ्ते अंत में पिता जी और हम दोनों वहां जा कर उन बकरियों की देख रेख कर लिया करते थे |

आज जिस शनिवार की चर्चा हम करने जा रहें हैं उस दिन पिता जी तो सुबह तड़के ही सीपिया की ओर चले गए थे और हमको यह आदेश दे गए थे कि डाकखाने से लौटने पर हम उनसे आ

कर मिलें | उस दिन डाकखाने से लौटते समय हमने अपने शहपाठी क्रिमला देवी को उनके चाहत के मुताबिक उनको भी अपने घोड़े पर बिठा कर सम्बेतो नदी के किनारे वाले मैदान में सवारी दिलाई थी इस लिए घर पहुँचने में कुछ देर हो गयी थी | फिर भी मध्यान का भोजन करने के बाद हम सीपिया के लिए रवाना हुए | आज मेरा घोडा गोल्डी कुछ नखड़े करने लगा था और कभी अपने पीछे के दो पैरों पर खड़ा हो जाता तो कभी जोर से दौड़ने लगता था |

इस लिए मुझ को उसको सँभालने में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ा था | रास्ते में कुछ किसानो ने अपने गन्ने में आग लगा दी थी जिस से उस में से सभी बर्रे भाग जाएँ और किसानो को गन्ना काटने में सहूलियत हो जाए |

उन भागते हुए बर्रों ने आकर मेरे घोड़े के माथे,आँखे और कानो में लिपट कर काटना शुरू कर दिया और मेरा गोल्डी अकुला कर बड़े जोरो से रास्ता छोड़ कर जंगलों में भागने लगा | हम ने

उस को रोकने की बहुत कोशिश किया पर वह रुकने का नाम ही नहीं लेता था |

मैं भी घबरा गया और न आव देखा न ताव जब मेरा घोडा जगल से बहार निकला तो हमको कई केवला के पेड़ दिखाई दिए और एक केवले के पेड़ के लचकते हुए डाल को पकड़ कर मैं लटक गया | हम को क्या पता था कि केवले के पेड़ के डाल इतना नरम और कमजोर होते हैं | वह डाल टूटा और मुझको ले कर जमीन पर धड़ाम से गिर पड़ा | एक तो उस पेड़ के पत्तियों के काँटों ने मेरे बदन में न जाने कितने जखम भर दिए थे और दूजे मेरे हाँथ में उस डाल के फंसने से बहुत सूजन होने लगी थी |

मेरे घोड़े गोल्डी को पास के नदी में अपने आप को ठंडवाते देख कर गोविन्द मामा दौड़े आये और हमको पिताजी के पास ले गए | पिता जी ने मेरे सभी जख्मों कि निरक्षण की और देखा कि

मेरा बायां हाँथ फूलने लगा था | उनके अनुमान से मेरे हाँथ कि हड्डियां टूट गयी थी | मामी जी ने हल्दी पियाज पीस कर मेरे हाँथ पर लगाया और उस को कड़े बैंडेज से बाँधा | बस क्या था पिता जी ने बकरियों कि निगरानी गोविन्द मामा के हांथों में सौंप कर हमको ले कर घर पहुंचे |

मेरी माता जी ने भी वही कहा जो कोई भी माँ अपने बच्चे के लिए कहती | "जान बची लाखों पाये |"

दो हफ्ते तक मेरे हाँथ में हल्दी पियाज का लेपन होता रहा | पीड़ा भी कम हो गया और शायद हाँथ के हड्डी भी जुट कर ठीक हो गए थे | आज मेरे शनि देवता को मानाने का जिम्मेदारी और प्राथना मेरे आजा जी की थी |

उन्हों ने शाम को पुरे परिवार के साथ बैठ कर गायत्री मन्त्र को १०८ बार जाप कर के अगियारी किया जिस से हमारे सभी गराहों का निवारण हो जाए |

ओम भूर्भुवा स्वः तत्सवितुर वरेनियम भर्गो देवशय धियो योनः पचोदय|त् |

आज भी इतफ़ाक से शनिवार था और हम आज भी बाल बाल बच गए | कब तक यह सिलसिला चलता रहेगा यह तो हमारे जनम कुंडली लिखने वाले उन दिनों के धुरंधर पंडित मथुरा महाराज जी ने भी नहीं लिखा था | हाँ पंडित जी ने मेरे जन्मकुंडली में यह जरूर लिखा था कि मेरे जीवन में कई ऐसी

दुर्घनायें आएँगी जिन से मैं प्रभु के कृपा से बाल बाल बच जाऊंगा अगर परम पिता परमेश्वर में मेरा विश्वास और भक्ति भाव बना रहेगा |

होइहैं वही जो राम जी रची राखन
अब क्या कर तरक बढ़ावे लाखन |

इन प्रसंगों को पेश कर के हम मियां मिटठू बनने की कोशिश नहीं कर रहें हैं पर आप बीती की प्रसार करके अपने भगवन भक्ति की आस्था की एक झलक देने की प्रयत्न कर रहें हैं | तथा एक घनिष्ट परिवार के श्रेष्ट आचार का कुछ थोड़ा सा चर्चा करने की कोशिश कर रहें हैं | पाठकगण से विनती है कि मेरे गुस्ताखी को माफ़ करें |

जब जब भीर पड़ी इस भक्त पर हमको भगवान का सहारा मिला है |
हमने अपने जीवन के सभी कार्यों को उनके ही आसरे पर किया है ||

अब शृंखला के चौथे अंक में देखना है कि हम और किस दुर्घटना के शिकार हो कर प्रभु कृपा से बाल बाल बच गए थे |

चौथा प्रसंग
जान बची लाखो पाये

यह ज़िक्र सन उन्नीस सौ बावन (१९५२) की है | हमारे जिले के पहाड़ों में एक हफ्ते से लगातार मूसलाधार वारिस हो रही थी | नदी नाले सब उफ्ला कर अपने किनारों को तोड़ कर बाहर बड़ी तेजी से बहने लगे थे | सभी लोगो में एक हलचल सी मच गयी थी | वे अपने किसी भी किसानी के कार्य करने से मजबूर थे क्यूंकि सब यातायात, सब रास्ते और सभी आना जाना बंद हो गया था |

हमारे बकरियों का व्यवसाय नदी के उस पार था और हम भी अपने बकरियों की देखभाल नहीं कर पाये थे | वहां के मज़दूरों से कोई संपर्क भी नहीं होने पा रही थी | मेरे पिता जी ने उस पार जाने की कई जतन करते रहे | अंत में उन्हों ने एक कुछ बांस काटे और उन बॉसों का एक पंथ याने बिलिम्बिलि बनाया |

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

Free-Ebooks.net